International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 6.457
Vol.6 No.6 July–Aug 2019

भीष्म साहनी की कहानियों में वृध्द विमर्श

Bagwan Niyajoddin Shahajahan
Head Dapt Of Hindi
Uma Mahavidyalaya Pandharpur, Dist- Solapur, 413304(Ms)

शोध सारांश:

आधुनिक हिंदी साहित्य विमर्श का साहित्य माना जाता है। पुनर्जागरण काल से हिंदी साहित्य पर पाश्चात्य विषय की छाप दिखाई देती है। आज स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसानी विमर्श, वृध्द विमर्श हिंदी साहित्य में दिखाई देते हैं। इन सभी विमर्शों हमारे साहित्य में देख सकते हैं। हिंदी साहित्य में वृध्द विमर्श की शुरुआत आजादी के बाद हुई। संयुक्त परिवार की परंपरा भारतीय समाज में नष्ट हो रही है। विशेषत: आजादी के बाद भारत में जो उच्च- मध्यम वर्ग विकसित हुआ है वह इस विमर्श के केंद्र में है। हिंदी साहित्यकारों ने जब यह महसूस किया कि जो बुजुर्ग कल तक घर के नीति - निर्माता थे, उन्हें उनके पद से मुक्त कर हाशिए पर ढकेला गया है। ऐसे ही लोगों को केंद्र में रखकर कई साहित्यकारों ने साहित्य लिखा है। प्रेमचंद्र, नागार्जुन, भीष्म साहनी, उषा प्रियंवदा, काशीनाथ सिंह आदि कहानीकारों ने वृध्दों के जीवन के अंतर्विरोधों, उनकी विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। भीष्म साहनी ने भी अपनी कुछ कहानियों में वृध्दों को केंद्र में रखा है, जिसमें 'चीफ की दावत' प्रमुख है।

मुख्य शब्द : भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उदारीकरण, उपेक्षित, वृध्द विमर्श।

प्रस्तावना :

आज भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उदारीकरण का युग है। इस युग में मनुष्य के हित की जा रही है, वहीं दूसरी ओर जीवन के अंतिम पड़ाव में आने पर उपेक्षित और असाहाय हो जाता है। आधुनिक काल में वृध्दों के प्रति हमारी दृष्टि संकीर्ण और संकुचित हो गई है। वृध्द हमारे लिए अनुपयोगी तथा अनावश्यक बन गए हैं। वे एकाकीपन तथा उपेक्षा का शिकार बन रहे हैं। उनका अकेलापन तथा उपेक्षित जीवन को विभिन्न साहित्यकारों ने चित्रित किया है। आज हम उनके प्रति असंवेदनशील बन गए हैं।

लेख का उद्देश्य :

इस लेख का मुख्य उद्देश्य वृध्द विमर्श पर विचार विनिमय करना है। भीष्म साहनी की इन कहानियों में वृध्द जीवन की पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है।

1) वृध्द विमर्श पर विचार विनिमय करना।
2) वृध्दों के जीवन का दुख, दर्द, पीड़ा को चित्रित करना।
3) वृध्दों के प्रति समाज के देखने के रवैए को दिखाना।

4) वृध्दों को समाज और परिवार में सम्मान दिलाना।

भीष्म साहनी की कहानियों में वृध्द विमर्श :

भीष्म साहनी एक कुशल कथाकार है। उन्हें प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में विमर्श का चित्रण किया है। उनकी 'चीफ की दावत' एक चर्चित कहानी है। इस कहानी में संकुचित हो रहे परिवारों में दूर रहे वृध्दों पर लिखा है। 'यादें कहानी' में उन्होंने वृध्दों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। इसमें उन्होंने यह दिखाया है कि आज वृध्दों के जीवन में कितना अंधेरा छाया है। कहानी का एक प्रसंग दृष्टव्य है "नहीं बच्चा, अब बहुत देर हो गई है। अंधेरे से मैं बहुत डरती हूं और घुटनों से हाथों को दबाए, हाय रामजी कहकर उठ खड़ी हुई, मैं तीन बार हड्डियां तुडवा चुकी हूं, बच्चा! एक दिन सड़क पर जा रही थी। पीछे से किसी साइकिलवाले ने आकर टक्कर मार दी। मैं औंधे मुंह जा गिरी। भला हो लोगों का जो उन्होंने मुझे खाट पर डालकर घर पहुंचा दिया।"[1] इस कथन से वृध्दा की अंतर्मन की व्यथा को समझ सकते हैं। एक भरेपूरे परिवार की वृध्द् औरत अकेले अपने सभी कार्यों को पूरा करती है। कहानी में चित्रित वृध्दा की यह पीड़ा आज के समाज में वृध्दों की जो स्थिति है उसे दिखाती है।

वृध्द विमर्श को लेकर लिखी कहानियां समाज के सामने यह प्रश्न उपस्थित करती है कि जिन बुजुर्गों के कारण आज हमारा अस्तित्व है क्या उनके प्रति हमारी संवेदनाएं मर चुकी है? भीष्म साहनी अपनी कहानियों में नई पीढ़ी को पिछली पीढ़ी के अस्तित्व और त्याग दिखाकर उनकी संवेदनाएं जगाते हैं। जैसे यह पंक्तियां दृष्टव्य है - "तेरी मां ने कैसे-कैसे दिन देखे हैं बेटा! तुझे क्या मालूम? चार बहनों के बाद तू आया था। हर बार जब तेरी मां प्रसूत में होती, तो तेरा ताऊ बाहर खाट बिछाकर बैठ जाता और हर बार गालियां बकता हुआ उठ जाया करता। बड़ा गुस्सैल आदमी था। एक-एक कर चारों का दाना पानी दुनिया से उठ गया। तब तू आया। सलामत रहो बेटा! जुग - जुग जिओ।"[2] यह कथन उस महिला का है जिसने अपनी पुरानी सहेली की अस्वस्थ और दयनीय अवस्था देखकर उस पुत्रों को बताती है जिसने अपनी मां को एक बंद कमरे में छोड़ दिया था।

समकालीन समय में वृध्दों को किस प्रकार हाशिए पर डाला जा रहा है इसका यथार्थ चित्रण इस प्रकार किया है "कोठरी की सामनेवाली दीवार के सहारे एक बूढ़ी औरत खाट पर पाव लटकाये बैठी थी। पर वह लखमी को अभी तक नजर नहीं आयी। कोठरी में खाट के पायताने के साथ जुड़ा हुआ एक कमोड़ रखा था और साथ में एक टीन का डब्बा। बुढ़िया ने एक पटरे पर पांव रखे थे। टांगों पर सूजन के कारण बोझिल हो रही थी, दो दो जोड़े फटे मौजों के चढ़े थे। कोठरी में पेशाब, मैले कपड़ों और बुढ़ापे की गंध आ रही थी।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि यह वास्तव चित्रण आज के समाज का एक नंगा सच है।

वृध्दों का एकाकीपन आज के युग की एक महत्वपूर्ण समस्या है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानी 'कुछ और साल' में अवकाशप्राप्त सुपरिटेंडेंट मधुसूदन के बुढ़ापे का चित्रण इस प्रकार से किया है "मधुसूदन की पत्नी वर्षों पहले मर चुकी है। दोनों बेटियों के ब्याह हो चुके हैं, एक नागपुर में रहती है, दूसरी कलकात्ता में। बड़ा बेटा वकील है, इसी शहर में रहता है। कभी-कभी पत्नी की घुडकियों के बावजूद बाप से मिलने आ जाता है। मझला बेटा फौज में है और आजकल नेपाल में है। छोटा बेटा जंगलात के महकमें में अफसर है और

आजकल देहरादून में है।"[4] इससे स्पष्ट है कि तीन बेटों के होते हुए भी मधुसुधन को अकेला जीवन जीना पड़ता है।

भीष्म साहनी की 'खून का रिश्ता' कहानी में वृध्द विमर्श के आर्थिक पक्ष को चित्रित किया है। आत्मीय रिश्तो में पूंजीवादी व्यवस्था के कारण किस प्रकार दरार आती है इसका चित्रण इस कहानी में हुआ है। चोरी का इल्जाम लगाया जाता है। आज के युग में कोई भी नहीं है। शब्दों में "मंगल से गिरा भी अजीब ढंग से धम्मा से जमीन पर पड़ा तो गुरु हो गया और पगड़ी उतर कर गले में आ गई। मनोरमा अपनी हंसी रोके रोक न सकी। आज के समाज की पराकाष्ठा को दिखाती है। सगे चाचा का खाकर गिरना और सगी भतीजी का उसे देखकर इस विद्रूपता का चित्रण किया है देता है।

भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' कहानी वृध्द विमर्श के सभी आयामों को चित्रित करती है। इस कहानी में वृध्द विमर्श का उत्कर्ष दिखाई देता है। मां के प्रति मिस्टर शामनाथ का जो वस्तववादी दृष्टिकोण है वह आज के समाज की गुरमीत सच्चाई का मकान करती है। औरतें मां अपने पुत्र के लिए एक समस्या बन गई है। आज बेटे के दफ्तर का चीफ उसके घर रात्रि भोजन के लिए आने वाला है। ऐसी स्थिति में मां के किसी भी कृत्य के कारण चीफ के सामने श्यामनाथ की इज्जत मिट्टी में मिल सकती थी। वह इस समस्या का हल बताते हुए कहते हैं "और मां हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे इतनी दूर तुम इतनी देर तो यहां बरामदे में बैठना फिर जब हम यहां आ गए आ जाए तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चले जाना।"[6] इसे स्पष्ट होता है कि आज की पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के साथ संवेदनात्मक स्तर पर नहीं जुड़ी है। इस कहानी में मां की पीड़ा, संत्रास और दर्द में स्पष्ट दिखाई देता है और भय स्पष्ट दिखाई देता है। मां अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहते हैं "नहीं बेटा! अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहो तो मैंने अपना ख्वाब पहन लिया अब यहां क्या करोगी जो थोड़े दिन जिंदगानी के बाकी है भगवान राम भगवान का नाम लूंगी तुम मुझे हरिद्वार भेज दो।"[7] वृध्द मां की व्यथा और दर्द पंक्तियों में दिखाई देता है। वह पुत्र जिसकी पढ़ाई के लिए उसने अपने गहने तक भेज दिए। बस इस आस में की यही तो मेरे बुढ़ापे का एकमात्र सहारा है उसी ने उसी ने जब मां की ओर से मुंह फेर लिया। तब अपने सारे दुख को समेटकर और दमा यह कहने कोई वॉइस होती है। यह आज का एक लगना यथार्थ है और भीष्म साहनी ने इसे अपनी कहानियों में चित्रित किया है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी कहानी में जो वृध्द विमर्श दौर शुरू हुआ है। उसमें वृध्द मन की सुविधाओं को कई कहानीकारों ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। परंतु भीष्म साहनी ने जितनी प्रकृति और प्रभाव हर एडल्ट प्रभावकारी ढंग से वृध्दों की दयनीय अवस्था का चित्रण किया है। उस तरह और किसी ने नहीं किया। निसंदेह 'चीफ की दावत' केवल हिंदी में ही नहीं बल्कि समग्र भारतीय भाषाओं के साहित्य में वृध्द विमर्श से संबंधित कहानियों में शीर्ष स्थान पाने की हकदार है। वृद्धावस्था के तमाम सामान सामाजिक, आर्थिक पक्षियों को क्षमता के साथ भीष्म साहनी ने चित्रित किया है। वह इस समाज की कलाई खोलने वाला जान पड़ता है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि ऐसी घटनाएं प्रतिदिन हमारे समाज में दिखाई देती है घटित होती हैं। आज से दस को पहले लिखी भीष्म साहनी की वृध्द विमर्श से संबंधित कहानियां इसलिए आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) साहनी भीष्म, प्रतिनिधि कहानियां, राजकमल पेपरबैक्स, पृष्ठ 48

2) वही, पृष्ठ 47

3) वही, पृष्ठ 43

4) वही, पृष्ठ 59

5) वही, पृष्ठ 35

6) वही, पृष्ठ 16

7) वही, पृष्ठ 22